Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत

सत्यमेव जयते
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF SKILL DEVELOPMENT
& ENTREPRENEURSHIP

N·S·D·C
National
Skill Development
Corporation
Transforming the skill landscape

ASCI
Agriculture Skill Council of India

प्रतिभागी पुस्तिका

क्षेत्र
कृषि और संबद्ध

उप–क्षेत्र
कृषि और संबधित गतिविधि

व्यवसाय
लघु मुर्गी पालक

सन्दर्भ आईडी: **AGR/Q4306,**
संस्करण 1-0 NSQF स्तर 4

लघु मुर्गी पालक

द्वारा प्रकाशित

महेंद्र प्रकाश प्राइवेट लिमिटेड
ई–42,43,44, सेक्टर – 7, नोएडा – 201301
उत्तर प्रदेश – भारत

सर्वाधिकार सुरक्षित,

प्रथम संस्करण, सितम्बर 2016

भारत में मुद्रित

कॉपीराइट © 2016

भारतीय कृषि कौशल परिषद
6वी, मंजिल, जी ऐन जी बिल्डिग, प्लॉट नंबर 10,
गुड़ग्राम – 122004, हरियाणा, भारत
फोनः 0124–4670029 / 4814673 / 4814659
ईमेलः info@asci-india.com
वेबसाइटः www.asci-india.com

खंडन

यहाँ निहित जानकारी विश्वसनीय सूत्रों से प्राप्त किया गया है भारतीय कृषि कौशल परिषद्। भारतीय कृषि कौशल परिषद् जो सटीकता के लिए सभी वारंटियों का पूर्णता या इस तरह की जानकारी की पर्याप्तता का खंडन करती है। भारतीय कृषि कौशल परिषद का त्रुटियों चूक या अपर्याप्तता के लिए कोई दायित्व नहीं होगा, यहाँ निहित जानकारियों में, या व्याख्या के लिए हर संभव प्रयास पुस्तक में शामिल कॉपीराइट सामग्री के मालिकों को पता लगाने के लिए किया गया है। प्रकाशकों की किताब को भविष्य के संस्करणों में स्वीकृतियों के लिए उनके ध्यान में लायी किसी भी चूक के लिए आभारी होंगे। भारतीय कृषि कौशल परिषद में कोई भी इकाई किसी भी नुकसान के लिए जिम्मेदार नही होगी, किसी भी व्यक्ति के द्वारा जो निरंतर इस सामग्री पर निर्भर करता है। इस प्रकाशन की सामग्री का कॉपीराइट है। इस प्रकाशन का कोई भाग दुबारा प्रस्तुत, संग्रहित या किसी भी रूप में वितरित या और किसी तरह से या तो कोई कागज या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम के द्वारा नहीं किया जा सकता है, जब तक भारतीय कृषि कौशल परिषद द्वारा अधिकृत ना किया जाय।

"कौशल विकास से एक बेहतर भारत का निर्माण होगा। अगर हमें भारत को विकास की दिशा में आगे बढ़ाना है तो कौशल विकास हमारा मिशन होना चाहिए।"

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री भारत

Certificate

COMPLIANCE TO QUALIFICATION PACK – NATIONAL OCCUPATIONAL STANDARDS

is hereby issued by the

AGRICULTURE SECTOR SKILL COUNCIL

for

SKILLING CONTENT : PARTICIPANT HANDBOOK

Complying to National Occupational Standards of
Job Role/ Qualification Pack: '**Small Poultry Farmer**' QP No. '**AGR/ Q4306 NSQF Level 4**'

Date of Issuance: **Sep 30th 2016**

Valid up to*: **March 31st, 2018**

**Valid up to the next review date of the Qualification Pack or the 'Valid up to' date mentioned above (whichever is earlier)*

Authorised Signatory
(Agriculture Skill Council of India)

आभार ज्ञापन

हम सभी संगठनों और व्यक्तियों के लिए आभारी हैं जिन्होंने इस प्रतिभागी पुस्तिका की तैयारी में हमारी मदद की हैं हम उन सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त करना चाहते हैं, जिन्होंने इस पुस्तिका की समीक्षा की और अध्यायों की गुणवत्ता और प्रस्तुति में सुधार के लिए मूल्यवान निविष्टियाँ प्रदान की हैं यह पुस्तिका कौशल विकास के कार्य को आगे बढ़ाएगी एवं हमारे हितधारकों में विशेष रूप से प्रशिक्षुओं, प्रशिक्षकों और मूल्यांकनकर्ताओं की सहायता करेगीं हम अपने विषय विशेषज्ञ के लिए आभारी हैं **डॉ रवि कुमार** जिन्होंने प्रतिभागी पुस्तिका की तैयारी में हमारी सहायता की हैं

यह उम्मीद है कि यह प्रकाशन QP / NOS आधारित प्रशिक्षण की पूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करेगां हम भविष्य में किसी भी सुधार के लिए उपयोगकर्ताओं, उद्योग विशेषज्ञों और अन्य हितधारकों के सुझावों का स्वागत करते हैं

KVK,Amravati

पुस्तिका परिचय

मुर्गीपालन करने वाले छोटे किसान कई तरह की गतिविधियों के लिए जिम्मेदार होते हैं, जैसे कि मुर्गी या बत्तख पालना। वे पोल्ट्री पक्षियों की उचित देखभाल करते हैं, उनके स्वास्थ्य और उत्पादन की जाँच करते हैं, माँस या अंडे का उत्पादन और इसकी मार्केटिंग देखते हैं। मुर्गी पालने वाले छोटे किसों को अपने कार्य से संबंधित परिचालन देखने होते हैं और रणनीतिक निर्णय लेने पड़ते हैं। किसानों को बेहतर परिणामों को ध्यान रखते हुए कार्य करना होता है और बेहतर उत्पादन के लिए कई तरह के साधनों और उपकरणों का प्रयोग करते हुए कार्यकुशलता दिखानी होती है। प्रशिक्षु को प्रशिक्षक के मार्गदर्शन में कार्य करते हुए अपनी कुशलता दिखाते हैं:

- **ज्ञान और समझ:** आवश्यक कार्य को समझने और इसे निष्पादित करने के लिए उचित परिचालन ज्ञान और इसकी समझ
- **कार्य प्रदर्शन मानदंड:** प्रशिक्षण के द्वारा आवश्यक कौशल बढ़ाएँ और निर्दिष्ट मानकों के भीतर परिचालन निष्पादित करें।
- **व्यवसायिक कौशल:** कार्य से संबंधित परिचालन निर्णय लेने की योग्यता।

इस पुस्तिका में मुर्गीपालन विषय से संबंधित उचित भूमिकाएँ जैसे कि शेड तैयार करना, पक्षियों की देखरेख करना, उनका भरण पोषण करना और पानी देना, स्वास्थ्य की जाँच करना, स्वामित्व और दस्तावेजों तथा रिकॉर्ड को बनाए रखने जैसी चीजें दी गई हैं। प्रतिभागी को बेहतर परिणाम को ध्यान रखते हुए कार्य करना चाहिए और वे ही अपने कार्य और शिक्षण के लिए जिम्मेदार होते हैं। प्रतिभागी को कई साधनों का प्रयोग करते हुए कार्य प्रदर्शन में अपनी उचित योग्यता दिखानी चाहिए और समस्याओं को तेजी से सुलझाने का निर्णय लेना चाहिए।

मुर्गीपालन के क्षेत्र उज्ज्वल भविष्य के लिए हम आपको ढेर सारी शुभकामनाएँ देते हैं

उपयोग किये गए प्रतीक

मुख्य शिक्षण परिणाम

कदम

समय

टिप्स

नोट्स

यूनिट का उद्देश्य

ग्मामतबपेम

तालिका सूची

क्रम संख्या	मॉड्यूल्स और यूनिट्स	पृष्ठ संख्या
1.	परिचय	1
	यूनिट 1.1- मुर्गीपालन की उत्पत्ति, प्राणिपालन और इसका इतिहास	3
2.	मुर्गीपालन की तैयारी और इनके आवास का रखरखाव करना (AGR/N4327)	15
	यूनिट 2.1 - शेड तैयार करना	17
	यूनिट 2.2- पक्षियों की सुरक्षा और स्वच्छता और जगह की साफ–सफाई सुनिश्चित करना	27
3.	पोल्ट्री शेड में पक्षियों का रखरखाव करना (AGR/N4328)	32
	यूनिट 3.1- पक्षियों का रखरखाव करना	34
	यूनिट 3.2- पक्षियों का निरिक्षण करना	37
4.	पक्षियों को खाना और पानी देना (AGR/N4329)	41
	यूनिट 4.1- भोजन के स्रोत	43
	यूनिट 4.2 - पक्षियों के लिए भोजन और पानी की आपूर्ति करना	55
5.	पोल्ट्री फार्म में पक्षियों के स्वास्थ्य की देखभाल करना (AGR/N4330)	69
	यूनिट 5.1-पक्षियों के स्वास्थ्य और खैरियत पर निगरानी रखना	71
	यूनिट 5.2-पक्षियों के लिए बुनियादी रूप से सुझाए गए उपचार दें	79
6.	पक्षियों से माँस और अंडों का उत्पादन करना (AGR/N4331)	86
	यूनिट 6.1 - उत्पादन गतिविधि का कार्यान्वयन	88
7.	उत्पादन के पश्चात साफ–सफाई का रखरखाव करना (AGR/N4332)	93
	यूनिट 7.1- उत्पादन के पश्चात साफ–सफाई गतिविधि	95
8.	उद्यमशीलता और मार्केटिंग कौशल बढ़ाएँ (AGR/N4333)	100
	यूनिट 8.1 - मुर्गीपालन क्षेत्र में अर्थशास्त्र और वित्त	102
	यूनिट 8.2 - मार्केटिंग	116
9.	मुर्गीपालन क्षेत्र से संबंधित पूर्ण दस्तावेजीकरण और रिकॉर्ड का रखरखाव (AGR/N4334)	120
	यूनिट 9.1 - दस्तावेज और रिकॉर्ड का रखरखाव करना	122
10.	मुर्गीपालन की सुरक्षा, स्वच्छता और इसकी साफ–सफाई (AGR/N4316)	129
	यूनिट 10.1- सुनिश्चित करें कि पक्षी और मुर्गीपालन कर्मचारियों की जगह सुरक्षित और साफ–सुथरी है	131

तालिका सूची

क्रम संख्या	मॉड्यूल्स और यूनिट्स	पृष्ठ संख्या
11.	नियोजनीयता एवं उद्यमशीलता कौशल	136
	यूनिट 11.1 – व्यक्तिगत क्षमताएं एवं मूल्य	141
	यूनिट 11.2 – डिजिटल साक्षरताः पुनरावृत्ति	157
	यूनिट 11.3 – धन संबंधी मामले	161
	यूनिट 11.4 – रोजगार व स्वरोजगार के लिए तैयारी करना	170
	यूनिट 11.5 – उद्यमशीलता को समझना	180
	यूनिट 10.6 – उद्यमी बनने की तैयारी करना	202

Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत

सत्यमेव जयते
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF SKILL DEVELOPMENT
& ENTREPRENEURSHIP

N·S·D·C
National
Skill Development
Corporation
Transforming the skill landscape

ASCI
एग्रीकल्चर स्किल काउन्सिल ऑफ इंडिया

1. परिचय

यूनिट 1.1 - मुर्गी पालन की उत्पत्ति, प्राणिपालन और इसका इतिहास

सीखने के प्रमुख परिणाम

इस मॉड्यूल के अंत में आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

- मुर्गीपालन क्षेत्र में मिलने वाले अवसरों को समझें और इसके विषय–क्षेत्र का अध्ययन करें
- लघु मुर्गीपालन किसान की भूमिका को समझना

यूनिट 1.1: मुर्गी पालन की उत्पत्ति, प्राणिपालन और इसका इतिहास

यूनिट के उद्देश्य

इस यूनिट की समाप्ति पर आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

- भारत में मुर्गीपालन क्षेत्र की स्थिति समझना
- भारत में इसके कार्यक्षेत्र और अवसरों को समझना

1.1.1 परिचय

युवाओं की भोजन शैली में हो रहे परिवर्तन और परिवारों की प्रयोज्य आय में आने वाली वृद्धि के कारण भारत में मुर्गीपालन क्षेत्र में वार्षिक रूप से ब्रॉयलर में 15% और देसी मुर्गियों में 10% की बढ़त हुई। अक्सर पोल्ट्री शब्द को मुर्गियों का पर्यायवाची शब्द माना जाता है, इसमें पक्षियों की कई पालतू प्रजाति जैसे कि मुर्गी, बत्तख एमु, हंस गिनी मुर्गी, जापानी बटेर, शुतुरमुर्ग, कबूतर, रिया इत्यादि शामिल होते हैं। इनमें अधिकतर प्रजाति कई तरह की कृषि जलवायु में अच्छी तरह से फलती–फूलती हैं और इन्हें न्यूनतम आवश्यकताओं के साथ कम से कम प्रबंधन के साथ तथा पोषक तत्वों की जरुरतों को पूरा करते हुए दुनिया में कहीं भी सफलतापूर्वक शुरू किया जा सकता है। इनमें से कई प्रजातियाँ दूसरी प्रजातियों के प्राणियों की तुलना में मिलने वाले प्रोटीन के बेहतरीन स्रोत हैं। मुर्गियों और बत्तखों, दोनों का ही प्रयोग अंडों और माँस के व्यवसायिक उत्पादन के लिए होता है। टर्की और गिनी का उत्पादन माँस के लिए होता है, जबकि एमु और शतुरमुर्ग माँस, तेल, पंख और चमड़े बनाने के काम में आते हैं।

मुर्गीपालन शब्द आमतौर पर मुर्गी के लिए प्रयोग में लाया जाता है, लेकिन इसमें अन्य प्रजातियाँ जैसे कि बत्तख, टर्की, गिनी पक्षी, बटेर एमु और हंस भी शामिल होते हैं।

चित्र 1.1.1 लघु सा मुर्गीपालन क्षेत्र

चित्र 1.1.1 बत्तख पक्षी

चित्र 1.1.1 टर्की पक्षी

चित्र 1.1.1 टर्की पक्षी

चित्र 1.1.1 गिनी पक्षी

चित्र 1.1.1 शतुरमुर्ग पक्षी

पुराने जमाने में पालतू पक्षियों को इस्तेमाल बलि के लिए किया जाता था। मुर्गियों की बड़ी आवाज और लड़ाई जैसे गुण के कारण उन्हें पाला जाता था। ये लोगों का मनोरंजन का अच्छा स्रोत थे। काफी समय बाद, दूसरे पक्षियों की प्रजाति की तुलना में इनके अंडों का इस्तेमाल खाने और दूसरे कामों में होने लगा। इसके अलावा, पहले यह माना जाता था मुर्गियों की जैविक सामग्री और इनके अंडे मानव विकास और उपभोग के लिए योग्य नहीं हैं।

मुर्गी (चिकन) शब्द पुराने अंग्रेजी शब्द 'icen' और जर्मन भाषा 'kivkenam' से आता है और मुर्गा (keuk) लाल जंगली मुर्गी (RJF) गैलस गैलस शब्द से आता है, ये सभी पालतू मुर्गी से जैसे दिखते हैं। चार्ल्स डार्विन के अनुसार, मुर्गियों को मूल रूप से लाल जंगली मुर्गियों (RJF) का वंशज माना जाता है। इसके बाद से घरेलू पक्षियों की प्रजाति की उत्पत्ति हुई।

घरेलू मुर्गियों की श्रेणी		
प्रजाति	समय	देश
मुर्गी	5400 ई.पू. 2500 से 2100 ई.पू.	चीनी–शिजान संस्कृति 2500 से लेकर 2100 ई. प. तक लेकर इन पक्षियों का योगदान आधुनिक दुनिया में संदेहास्पद रहा है, हड़प्पा संस्कृति की सिंधु घाटी की सभ्यता इसके प्रसार का मुख्य स्रोत हो सकता है।
कलहंस और जंगली बत्तख	2500 ई.पू. 1500 ई.पू.	चीन–मिस्र में 1500 ई.प. के बाद से जंगली बत्तखें पाली जाती थीं । मध्य युग तक जंगली बत्तख नहीं पाली जाती थीं
रिंग के आकार वाले तीतर	1300 ई.पू.	ग्रीस
टर्की	200 ई.पू. से 700 ई.प.	मेक्सिको
मस्कवी बत्तख	16वीं शताब्दी	कोलंबिया, पेरू
जापानी बटेर	11वीं शताब्दी	जापान, चीन, कोरिया
गिनी मुर्गा	1500 ई.प.	पुर्तगाली खोजकर्ताओं ने यूरोप में पश्चिमी अफ्रीकी पक्षियों का प्रचार प्रसार किया

तालिका 1.1.1. घरेलू मुर्गियों का अनुक्रम

लगभग 7,500 वर्ष पहले मुर्गी पालन प्रारंभ हुआ। कोलमैन ने (1958) ने घरेलू मुर्गियों के भाषाई संदर्भ का एक ठोस तर्क प्रस्तुत किया। उन्होंने पाया कि पूरे एशिया और मध्य तथा उत्तरी यूरोप में प्रचलित संस्कृत शब्द "कुक्कुट" से यह बदलते हुए इंग्लैंड में जाने के बाद "चिकन" और "मुर्गे" के नाम से दुनिया भर में मशहूर हो गया। जंगली मुर्गे की 4 प्रजातियाँ प्रचलित हैं। इन्हें मूल रूप से गैलस गैलस (जंगली लाल मुर्गा), गैलस गैलस सोनेरटी (जंगली स्लेटी मुर्गा), गैलस लेफेयेटी (सीलोन जंगली मुर्गा) और गैलस (जंगली हरा मुर्गा), ये भी "गैलस" यानी मुर्गे की प्रजाति से जुड़े हैं।

पक्षियों की पहली प्रजाति जिसका सबसे अधिक पैमाने पर उत्पादन किया गया था वह थी मुर्गी, इसके बाद टर्की और गिनी मुर्गी भी पाली जाने लगी। मुर्गीपालन की यह कला सबसे पहले एशिया के उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में की जाने लगी। काले रंग के पक्षी भारत में पाए जाते थे, लेकिन यूरोप में नहीं, कोलमैन बताते हैं कि पूर्वी और पश्चिमी अफ्रीका में घरेलू पक्षी की मूल उत्पत्ति का क्षेत्र भारत है। यूनानी लोग इसे लड़ाने के लिए पालते थे, जबकि रोमन खाने के लिए। डार्विन (1890) ने ग्रेट ब्रिटेन में 19वीं शताब्दी के अंत में पाली जाने वाली मुर्गियों का उल्लेख किया है। कोलमैन इनकी नस्ल और प्रकार को उत्पत्ति क्षेत्र के अनुसार चित्रित किया है। अमेरिकी, एशियाई, ब्रिटिश और कई नई प्रजातियाँ ग्रेट ब्रिटेन में विकसित की गईं जिनमें ससेक्स और ऑरपिंगटन प्रमुख हैं। अमेरिका प्लायमाउथ रॉक में, व्यानडॉट , रोड आइलैंड लाल और न्यू हैम्पशायर जैसे क्षेत्र विकसित किए गए। पोल्ट्री आनुवांशिकी और चयन के क्षेत्र में अमेरिकी दुनियाभर में सबसे अग्रणी रहे हैं।दो अलग–अलग घटनाओं ने मुख्य रूप से श्मेंडलीन सिद्धांतों के पुनराविष्कार और इन्हें पकड़ने के लिए उपयुक्त जाल ने 1930 और 1950 के बीच आधुनिक पोल्ट्री फार्म का विकास किया और मुर्गीपालन एक कला से विज्ञान में बदल गई।

इस अवधि के दौरान आनुवंशिकता, आनुवंशिकता संबंध, इसका चयन, अंतर और इसके समीकरण की अवधारण विकसित हुई और समान्य रूप से यह प्रयोग में आने लगी। 1950 से मुर्गीपालन क्षेत्र संकुचित हुआ और इसमें लेयर, ब्रॉयलर और दोनों प्रयोजनों के लिए ध्यान दिया जाने लगा। इन तीनों में अंतिम उत्पाद एकाधिक कार्यों को पूरा करता है। सफेद पैर वाले नस्ल को खास माना जाने लगा और सफेद कवच वाले अंडों के उत्पादन में इसका प्रयोग होने लगाय रोड आइलैंड रेड, न्यू हैम्पशायर, बार्ड प्लेमाउथ रॉक और आस्ट्रोलार्प को आमतौर पर पर भूरे रंग वाले अंडे और कई प्रयोजन पूरा करने वाले पक्षी के रूप में देखा जाता है। 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में सफेद कोर्निश और व्हाइट प्लेमाउथ रॉक ब्रॉयलर मांस के लिए पसंद किए जाने लगे।

तीतर परिवार

पक्षियों का यह पूरा समूह उड़ने वाला पक्षी कहलाता है (लैटिन में एविस यानी पक्षी), इसमें कई श्रेणियाँ और पक्षियों के परिवार सम्मिलित हैं और इन्हें इनकी विशिष्टता के आधार पर विभाजित किया गया है। मुर्गी, तीतर, मोर, गिनी मुर्गी और गैलीफॉर्मेस श्रेणी के अंतर्गत आते हैं। मुर्गी, तीतर और मोर फैसिएनिडी (तीतर की तरह) परिवार और फैसिएन उप–परिवार के अंतर्गत आते हैं, क्योंकि इनके पूँछ की ओर के पंख उतरते हैं, इसलिए पंख बाहरी ओर से उतरते हुए इसके मध्य भाग तक पहुँचते हैं।

मुर्गी ही तीतर परिवार से जुड़ा ऐसा पक्षी है जिसकी कुक्कुटशिखा होती है इसलिए इसे जीनस यानी गिलास प्रजाति के अंतर्गत गिना जाता है (मुर्गे की पूँछ मुड़ी और खड़ी होती हैं)।

अन्य प्रजाति के पक्षियों की उत्पत्ति और इनका पालन

बत्तख शब्द पुराने अंग्रेजी शब्द और जर्मन भाषा से उत्पन्न हुआ है। "ड्युकन" का अर्थ होता है गोता लगाना। पश्चिमपूर्वी एशिया बत्तखों का घर माना जाता है। बत्तखों की सभी प्रजातियाँ जंगली बत्तखों से उत्पन्न है। चीन में बत्तख लगभग 3000 वर्ष पहले से पाले जा रहे हैं। बत्तख अंडों तथा माँस, दोनों के लिए महत्वपूर्ण हैं। एशिया खास तौर पर चीन बत्तखों के अंडों तथा माँस के उत्पादन में प्रमुख है। दुनियाभर में कुल 75% बत्तख काटे जाते हैं जिसमें लगभग 66% बत्तख का माँस उत्पादन अकेले चीन करता है। चीनी लोगों को वजन में हल्के भूने हुए बत्तख पसंद आते हैं। व्यवसायिक रूप से बत्तख के माँस से जुड़े उद्योग 'पेकिन' बत्तख पर निर्भर हैं। बत्तख के अंडे एशियाई देशों जैसे कि चीन, वियतनाम, मलेशिया, म्यांमार और थाईलैंड तथा कई दक्षिण पूर्वी देशों में पसंद किए जाते हैं।

कलहंस

लगभग 2500 से कलहंस पाले जाते थे। गीस शब्द की उत्पत्ति "गैन्स और अंग्रेजी के शब्द गैस (गेस)" से हुई। दुनिया भर में चीन कलहंस का प्रमुख उत्पादक है। बत्तख की तरह दिखने वाले गीस को माँस के लिए पाला जाता है। कलहंस के पंख अतिरिक्त आय के स्रोत हैं क्योंकि इसका प्रयोग सोने की चीजें और कपड़ा उद्योग में होता है। कलहंस छोटे किसानों द्वारा पाले जाते हैं जो 10 या अधिक से अधिक 100 कलहंस पक्षियों को अतिरिक्त आय के लिए पालते हैं। माँस के अलावा, कलहंस की आपूर्ति करना फायदे का सौदा है, ये 75,000 डॉलर प्रति टन के हिसाब से बेचे जाते हैं। इसके पंखों के हल्के होने के कारण इसका प्रयोग सर्दियों के जैकेट, तकिए, चादरें और टेक्सटाइल संबंधी कई चीजों को बनाने में होता है। फ्वा ग्रास (जिगर का मोटा हिस्सा) पश्चिमी देशों में एक स्वादिष्ट भोजन माना जाता है और भोजन में इसका प्रयोग होता है। इसका स्वाद एशियाई देशों तक फैला है।

कलहंस का माँस गोमाँस की तुलना में उत्पादन में 25% सस्ता है और माँस उत्पादकों के लिए एक विकल्प भी है। कलहंस के घास चरने के कारण इसके चारे की खपत में लगभग 30% तक की कमी आती है। प्रजाति, वार्षिक अंडा उत्पादन, अंडे का औसत भार, ऊष्मायन अवधि और विभिन्न पक्षी के प्रजातियों का उत्पादक जीवन और लिंग का विवरण, युवा।

टर्की

टर्की उत्तरी अमेरिका की प्रजाति है। इन्हें 2,200 वर्षों से पाला जा रहा है और 1498 में इनकी खोज हुई, अमेरिका दुनियाभर में इसका अग्रणी उत्पादक है। मूल से रूप से माँस के लिए इसका उत्पादन किया जाता है। इसका माँस चर्बी रहित होता है। दुनियाभर में टर्की के माँस का उत्पादन 7.2 प्रतिशत है। अमेरिका, फ्रांस और जर्मनी दुनिया भर के आधे टर्की माँस का उत्पादन करते हैं। हाल के सालों में ब्राजील, पोलैंड और हंगरी जैसे देशों में भी इसके माँस के उत्पादन में इजाफा हुआ है। अमेरिका और इंग्लैंड के बाहर ग्राहक भूना हुआ माँस (डार्क मीट) पसंद करते हैं। मेक्सिको, यूरोपीय संघ और रूस टर्की के माँस का आयात करते हैं।

जापानी बटेर

(कॉटर्निक्स coturnixjaponica)

बटेर शब्द की उत्पत्ति फ्रांसिसी शब्द "कैल" (कॉटर्निक्स कॉटर्निक्स) से हुई है। जापानी बटेर "फैसिएनिडी" परिवार के अंतर्गत आता है। इन्हें 1910 में पाले जाते थे और 1930 से इनका व्यवसायिक प्रयोग होए लगा। पश्चिमी देशों में क्वेल बॉब क्वेल की प्रजाति (कॉलिन्स वर्जिनियन) आम है।

बटेर को माँस और अंडों के लिए पाला जाता है। पवित्र कुरान और बाइबिल में भी बटेर के माँस को भोजन के लिए आदर्श माँस माना गया है।

जापान, हांगकांग, कोरिया, फ्रांस, इटली, जर्मनी और ब्रिटेन जैसे देशों में अंडों और माँस के लिए बटेर का उत्पादन बेहद लोकप्रिय है। हाल ही में ब्राजील ने ही बटेर के उत्पादन में दिलचस्पी दिखाई। बटेर के अंडों के उत्पादन में जापान अग्रणी देश है। बटेर के सबसे अधिक माँस का उत्पादन का स्पेन और फ्रांस करते हैं। जापानी बटेर दुनियाभर में लोकप्रिय होते जा रहा है। ब्रिटेन में भी बटेर के उत्पादन में इजाफा हो रहा है। भारत में 1974 में यह सीएआरआई इज्जतनगर में आया।

कबूतर

कबूतर शब्द की उत्पत्ति अंग्रेजी के शब्द "पिजोन, लैटिन के पीपियान" से हुई है। कबूतर लगभग 5000 वर्षों से पहले से पाले जा रहे हैं और मुख्य रूप से इनका प्रयोगमाँस के लिए होता है। चीनों लोगों द्वारा इसके पसंद किए आने के कारण कबूतरों की जनसंख्या में वृद्धि हो रही है और यह एक लोकप्रिय डिश बन रहा है।

तिनामोउस (शतुरमुर्ग और एमु)

शतुरमुर्ग: मूल रूप से शतुरमुर्ग शब्द अंग्रेजी और फ्रेंच शब्द "ऑस्ट्रिस" से आता है। इसकी उत्पत्ति अफ्रीका में हुई। दक्षिण अफ्रीका का ग्राहम जिला बड़े पैमाने पर शतुरमुर्ग पालने के लिए जाना जाता है। 1857 से शतुरमुर्ग *दक्षिण* अफ्रीका में पाले जा रहे हैं। मिस्र तथा रोम की कुलीन महिलाएँ शतुरमुर्ग की सवारी करती थीं। ग्रीक शतुरमुर्ग को कैद में रखते थे और भोजन के लिए इसका प्रयोग करते थे। कम चर्बी और लाल माँस से भरपूर होने के कारण यह लोगों का ध्यान आकर्षित करता है। पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में चमड़े के प्रयोग के लिए शतुरमुर्ग 1987 से पाला जा रहा है। यह सबसे अधिक आयु तक जीने वाला पक्षी है। शतुरमुर्ग का उत्पादन दुनिया भर में भले ही धीमी गति से बढ़ रहा हो, लेकिन इसका उत्पादन स्थिर है। यूरोपीय लोगों ने 1860 में माँस के लिए इसका प्रयोग किया। 1838 से दक्षिण अफ्रीका से यूरोप तक इसके पंखों का निर्यात होने लगा। दक्षिण अफ्रीका में इसका उत्पादन सफल रहा और दुनिया भर में इसे आजमाया जा रहा है।

पोल्ट्री शब्द आमतौर पर मुर्गियों के लिए प्रयोग होता है, लेकिन इसमें बत्तख, टर्की, गिनी पक्षी, बटेर, एमु, कलहंस के अलावा और भी कई प्रजातियाँ शामिल होती हैं।

मुर्गी उत्पादन में ब्रायलर उत्पादन, लेयर फार्मिंग ऐड ब्रीडर फार्मिंग शामिल है जिन्हें अब व्यवसायिक दर्जा मिल चुका है। सरकार, विश्वविद्यालय और निजी संस्थानों में कई मुर्गियों की कई ग्रामीण प्रजातियाँ विकसित हो रही हैं जिनसे उच्च दर्जे के अंडे और माँस मिलते हैं। ये ग्रामीण किस्म इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि ये रंग में 'देसी' पक्षियों के समान है

लेकिन इनके अंडे और माँस का उत्पादन समान ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी स्थितियों के अभाव में भी अधिक है।

छोटे पैमाने पर व्यवसायिक उत्पादन प्रणाली और गाँव या पृष्ठभूमि प्रणाली विशिष्ट रूप से छोटे पोल्ट्री उत्पादन की क्षमता दर्शाती हैं। यद्यपि विशिष्ट पोल्ट्री परिवार के लिए दक्षिण अफ्रीका में इसे वर्गीकृत कर अपनाया जाता है।

लघु पैमाने पर पोल्ट्री उत्पादन प्रणाली में माँस या अंडे या दोनों का उत्पादन हो सकता है। पक्षियों को प्रजनन के लिए खरीदा जाता है। इनके उत्पाद व्यवसायिक रूप से बेचे जाते हैं। ऐसे खेत जो पक्षियों की निरंतर भीतर ही रखते हैं।

पारंपरिक मुर्गीपालन प्रणाली में केवल कुछ बुनियादी चीजों के साथ देसी मुर्गीपालन उत्पादन, संकर नहीं, अंडे के उत्पादन के बजाय माँस पर ध्यान दिया जाता है और संयुक्त उत्पादन प्रणाली का प्रयोग किया जाता है।

भारत में मुर्गीपालन का कार्य एशिया और अफ्रीका जैसे अन्य विकसित देशों की तरह पारंपरिक प्रणाली तथा आधुनिक प्रणाली द्वारा होता है, जहाँ ग्रामीण क्षेत्र में इसमें कम निवेश और पिछड़ी प्रणाली का प्रयोग होता है, वहीं शहरी और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में अधिकतम उत्पादन के लिए आधुनिक प्रणाली और पूर्ण क्षमता का प्रयोग होता है। दोनों प्रणाली एक–दूसरे की पूरक ही नहीं हैं, बल्कि ये स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों का कुशल प्रयोग करती हैं, इससे नौकरी की संभावनाओं और उत्पादन में इजाफा हुआ है, उत्पादन में वृद्धि आई है, इसका उत्पादन लोकप्रिय हुआ है और इसके आकार तथा उत्पादन में बढ़त हुई है, जिससे पिछले 40 वर्षों से इसकी बनावट और गुणवत्ता में परिवर्तन हुआ है। मुर्गीपालन का प्राथमिक व्यवसाय के कारण इससे जुड़े कई सहायक उद्योगों को भी इसका लाभ मिला जैसे कि पशु खाद्य निर्माण उद्योग, उपकरण और मशीनरी, फार्मास्युटिकल और जैविक तथा अंडों और मीट की प्रोसेसिंग।

ग्रामीण मुर्गीपालन उत्पादन: समाज के कमजोर वर्ग में ग्रामीण मुर्गीपालन उत्पादन को सामाजिक–आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण घटक माना जाता है। इसके अलावा, यह स्व–रोजगार के अवसर देता है और कम मूल्य पर प्रोटीन भरे भोजन के साथ अतिरिक्त पूरक आय भी देता है।

पक्षियों की संख्या के आधार और प्रबंधन विधि के अनुसार ग्रामीण मुर्गीपालन क्षेत्र निम्न रूप से श्रेणीबद्ध है,

1. लघु इकाई 5000–10000 पक्षी
2. लघु आँगन इकाई– 1000–5000 पक्षी
3. ग्रामीण मुर्गी इकाई– 10–50 पक्षी
4. पारिवारिक मुर्गीपालन 2–10 पक्षी

उपरोक्त सभी में से, अधिकतर सभी तटीय जिलों में ग्रामीण मुर्गीपालन उत्पादन और पारिवारिक मुर्गीपालन विशेष रूप से लोकप्रिय हैं। इसके अलावा, इसे मुर्गीपालन की फ्री रेंज या संमार्जक प्रणाली कहा जाता है।

पारंपरिक फ्री–रेंज (1–10 पक्षी) निम्न इनपुट से लेकर आउटपुट तक	उन्नत फ्री–रेंज (50–200 पक्षी) निम्न इनपुटध्मध्यम आउटपुट	लघु–पैमाना सीमित (50–200 पक्षी) उच्च इनपुटध्मध्यम आउटपुट
अधिकतर ग्रामीण परिवार	ग्रामीण परिवारों की सामान्य संख्या	कुछ ग्रामीण परिवार
महिलाओं की देखरेख में होते हैं	महिला और उसके परिवार द्वारा	व्यवसाय, महिला
घरेलू उपभोग	घरेलू उपभोग और स्थानीय बाजारों	
लघु नकद आय	पारिवारिक आय	व्यवसाय आय
सामाजिक और सांस्कृतिक अहमियत	सामाजिक महत्व	मामूली सामाजिक महत्व
ळर्पो, धार्मिक		
	माइक्रो क्रेडिट	परिसंपत्तियों पर आधारित ऋण
देशी नस्ल	स्वदेशीध्उन्नत नस्ल	हाइब्रिड (ब्रायलर या लेयर्स)
उच्च मृत्यु दर	सामान्य मृत्यु दर	अल्प मृत्यु दर
भरण नहीं (स्वच्छता)	कम भरण (अर्ध–स्वच्छ)	संतुलित भरण
कोई टीकाकरण नहीं	न्यू कैसल रोग टीकाकरण	अनेक टीकाकरण योजनाएँ
कोई दवा नहीं	मामूली उपचारध्स्थानीय उपाय	पूर्ण उपचार
कोई आवास नहीं	सामान्य आवास	पिंजरे वाले घर या कूड़ा कर्कट
अंडों का उत्पादन: 30–50	अंडों का उत्पादन: 50–150	अंडों का उत्पादन: 250–300
दीर्घ प्रजनन अवधि	अल्प प्रजनन अवधि	प्रजनन नहीं
विकास दर = 5–10 g/day	विकास दर = 10/20 g/day	विकास दर = 50–55 g/day

तालिका 1.1.1 पोल्ट्री फार्मिंग